2

सोमवार

मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:12-19; लूका 19:45-48; यूहन्ना 12:20-50

''यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सबको, जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया; ... और अन्धे और लंगड़े, मन्दिर में उसके पास आए, और उस ने उन्हें चंगा किया'' (मत्ती 21:12-14)।

यीशु अब यरूशलेम में पहुंच चुका था। वह किसी पत्रिका के मुख पृष्ठ पर ''मैन ऑफ़ द ईअर'' या नोबेल शांति पुरस्कार पाने वाला नहीं बना। वह हमारा उद्धारकर्त्ता बना! उसने गधे (शांति का प्रतीक) की सवारी की ; उसने घोड़े (युद्ध का प्रतीक) की सवारी नहीं की। सुलैमान के बाद कोई राजा गधे पर सवार होकर नगर में नहीं आया था (देखें 1 राजाओं 1:38)।

मुद्दा पहले की तरह अधिकार का था। इस सोमवार यीशु ने अपनी सिफ़ारिशें पेश करनी थीं।

यीशु ने अंजीर के पेड़ को शाप दिया

यीशु को भूख लगी थी। उसने पत्तों से भरा अंजीर का एक पेड़ देखा, परन्तु यह जानकर कि उसमें कोई फल नहीं है, वह परेशान हुआ। उसने उस पेड़ को सदा के लिए शाप दे दिया (देखें मत्ती 21:18-22; मरकुस 11:12-14, 20-26)। यह वह यीशु तो नहीं है, जिसकी कल्पना हमने अपने मनों में की है। इस अवसर पर किया गया उसका कार्य यीशु की पूरी सेवकाई में किए जाने वाले दो नकारात्मक (विनाशकारी) आश्यर्चकर्मों में से एक था (देखें मत्ती 8:28-34)। इससे प्रकृति को नुकसान हुआ, परन्तु मनुष्य जाति को नहीं। वह एक सबक दे रहा था, जो प्रेरितों के लिए सीखना आवश्यक था। पाप घमण्ड और कपट था। दिखने में लगता था कि उस पेड़ पर अंजीर लगे हैं, पर वास्तव में ऐसा नहीं था। यहूदी अगुवे परमेश्वर के लोग होने का दावा करते थे, पर वास्तव में वे नहीं थे। पमेश्वर द्वारा बुलाए जाने के लिए यहूदियों को दीन होना चाहिए था। इसके बजाय उन्हें लगा कि वे तो सर्वश्रेष्ठ हैं और उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

अंजीर के पेड़ का अचानक सूख जाना देखकर पतरस हैरान हो गया था। क्यों? प्रेरितों ने यीशु को पानी पर चलते, बीमारों को चंगा करते और मुर्दों को जिलाते देखा था। इसके बावजूद यीशु की आज्ञा से अंजीर के पेड़ को सूखे देखकर वे स्तब्ध रह गए थे!

यीशु ने मन्दिर को साफ़ किया

उसके बाद यीशु मन्दिर में चला गया। बिना परिचय के वह सिखाने लगा। एक ओर उसने अन्धों को आंखें दीं और लंगड़ों को चंगा किया (देखें मत्ती 21:12-16; मरकुस 11:15-18; लूका 19:45-48)। महायाजकों और शास्त्रियों ने उसके अद्‌भुत काम देखे थे (मत्ती 21:15) और

निश्चित रूप से उसके ईश्वरीय होने को जानते थे।

मन्दिर का क्षेत्र पवित्र रखा जाना आवश्यक था, परन्तु इसका दुरुपयोग हो रहा था! लोग इसका इस्तेमाल यरूशलेम में शार्टकट के रूप में कर रहे थे, वे इसे लोभ और लालच के स्थान के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे।

यहूदियों को इब्रानी मुद्रा शेकेल में मन्दिर का कर देना होता था। यरूशलेम आने वालों को मन्दिर का कर देने के लिए रोमी मुद्रा दीनार या यूनानी मुद्रा द्राकमा देनी होती थी। धन का व्यापार करने वाले आराधकों से धन के विनिमय के लिए बहुत पैसे वसूलते थे। मन्दिर को शुद्ध करते समय यीशु ने लोगों पर आक्रमण नहीं किया, परन्तु उन्हें भगाया अवश्य। उसने सामान उलट-पुलट कर दिया। उसने बाइबल में से दोहराया ''मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो'' (मत्ती 21:13; देखें यिर्मयाह 7:11)। वह कायर या ''नामर्द'' नहीं था। वह ''मर्दों में से मर्द'' था। वह शारीरिक रूप से शक्तिशाली ही नहीं, बल्कि वचन का इस्तेमाल भी पूरी शक्ति से करता था। उसकी भाषा सीधी और स्पष्ट होती थी।

यीशु ने सिखाना जारी रखा

इन सब के बीच, यूनानियों का एक शिष्टमण्डल यीशु से भेंट के लिए आया (यूहन्ना 12:20-50)।[1] यहूदी तो यीशु की हत्या के लिए, परन्तु यूनानी उसे सुनने के लिए ढूंढ़ते थे! फिलिप्पुस किसी न किसी को यीशु के पास लाता ही रहता था। अन्द्रियास के साथ मिलकर वह यीशु के पास गया। यीशु को पता था कि ''उसका समय'' आ गया है, तौ भी उसने गहरी सच्चाइयां सिखाना जारी रखा। उसने समझाया कि बीज को जीवित रहने के लिए मरना अवश्य पड़ता है और जो अपने प्राणों को प्रिय जानते हैं, वे उन्हें खोएंगे (यूहन्ना 12:21-26)।

फिर यीशु ने इकट्ठा हुए लोगों के बीच जाकर कहा, ''हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।'' उसके जीवन में तीसरी बार आकाश से एक आवाज़ आई (यूहन्ना 12:28)। कइयों को लगा कि जैसे बादल गरजा हो, परन्तु यीशु को पता था कि यह विजय की प्रतिज्ञा है। उसकी मौत से शैतान को नीचे फैंका जाना था। इस बार यीशु ने घोषणा की, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा'' (यूहन्ना 12:32)।

आश्चर्यकर्मों के तेज से भरी इस शिक्षा के बावजूद, धार्मिक अगुवों ने विश्वास करने से इनकार कर दिया। यूहन्ना ने निष्कर्ष निकाला कि उन्हें ''... मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी'' (यूहन्ना 12:42, 43)।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]टीकाकार इस बात पर सहमत नहीं हैं कि यह उपदेश सोमवार को दिया गया या मंगलवार को। रविवार को विजयी प्रवेश और शुक्रवार को अन्तिम भोज के बीच यूहन्ना रचित सुसमाचार में केवल यही एक घटना है।